[illegible] जाता है। अतः नीतिशास्त्र के [illegible] कर्तव्य, उत्तरदायित्व, अधिकार तथा नैतिक [illegible] भी आते हैं।

6) नैतिक भावना (moral consciousness) — नैतिक निर्णय के बाद मनुष्य में उचित कर्म करने तथा आनंदमय संतोष तथा अनुचित कर्म करने पर विषाद या पश्चाताप की अनुभूति होती है इसे ही नैतिक भावना कहते हैं। इस पर भी नीतिशास्त्र में विचार होता है।

7) इच्छा की स्वतंत्रता (freedom of will) — इच्छा की स्वतंत्रता का नीतिशास्त्र में महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अभाव में मानवीय कर्मों का उचित या अनुचित में मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। अतः नीतिशास्त्र में इच्छा की स्वतंत्रता के स्वरूप एवं महत्व आदि पर विचार किया जाता है।

8) दण्ड तथा पुरस्कार — सरल शब्दों में दण्ड शक्ति से विरुद्ध कर्मों के आधार पर दी जाती व्यक्ति को उसके कार्यों के आधार पर उत्तरदायी ठहराया जाता है और इसके आधार पर उसे दण्ड या पुरस्कार दिया जा सकता है। अतः दण्ड पुरस्कार की प्रकृति तथा इसके तरीके भी नीतिशास्त्र के विषय हैं।

9) व्यक्ति तथा समाज — नीतिशास्त्र का संबंध समाज में रहने वाले व्यक्ति के आचरण से है। अतः व्यक्ति की सामाजिक नैतिक चेतना का अध्ययन नीतिशास्त्र करता है। इस प्रकार नीतिशास्त्र में राज्य तथा व्यक्ति के संबंध, व्यक्ति तथा समाज का संबंध, यहाँ तक की अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता और नैतिक-प्रगति आदि इसके क्षेत्र के अन्तर्गत आ जाते हैं।

10) नैतिक-प्रत्यय- नीतिशास्त्र का सम्बन्ध नैतिक प्रत्ययों (Moral term) से होता है एवं सभी नैतिक प्रत्ययों के अन्तर्गत आने वाले विवेचना के अभाव में नीतिशास्त्र का अध्ययन सम्भव नहीं है। समकालिन नीतिशास्त्रियों ने नैतिक-प्रत्ययों के विश्लेषण को ही नीतिशास्त्र की मुख्य समस्या माना है। अतः नीतिशास्त्र के अन्तर्गत नैतिक-प्रत्ययों, नैतिक कथनों तथा नैतिक निर्णयों के तार्किक एवं भाषागत विवेचन का कार्य भी इसके क्षेत्र के अन्तर्गत आ जाते हैं।

इस प्रकार प्रकार 'कर्तव्य', 'दायित्व' आदि अनेक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि समस्याओं का नैतिक दृष्टि से अध्ययन करना भी इसका लक्ष्य है। इस प्रकार यह क्षेत्र नीतिशास्त्र की भाँति अत्यन्त व्यापक तथा विस्तृत है।

कुछ महत्वपूर्ण नैतिक प्रत्ययों का अर्थ

अर्थ - नीतिशास्त्र के विद्यार्थियों को नीतिशास्त्र के अध्ययन में एक विशेष कठिनाई यह होती है कि उनको कुछ ऐसे नैतिक शब्द या प्रत्यय मिलते हैं जिनका अर्थ उन्हें आसानी से समझ में नहीं आता इसलिए नीतिशास्त्र के अर्थ को समझने के लिए कुछ नैतिक प्रत्ययों के अर्थ को भी जानना आवश्यक है। ऐसे शब्द या वाक्यांश को नैतिक शब्द या नैतिक वाक्यांश कहा जाता है जिनके द्वारा हम किसी व्यक्ति, उसके चरित्र अथवा आचरण को, किसी भी रूप में मूल्यांकन करते हैं। इस अर्थ में उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ, अच्छा-बुरा, कर्तव्य, अधिकार आदि जैसे शब्दों को नैतिक शब्द कहा जाता